आधुनिकताबोध की अवधारणा : समसामयिकता का सन्दर्भ

–रीता देवी एवं डॉ. दुष्यन्त कुमार त्रिपाठी*
शोध छात्रा– हिन्दी
*असि.प्रोफे. : हिन्दी विभाग
गाँधी शताब्दी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा–आजमगढ़

आधुनिक बोध अपने प्रारम्भिक काल से अब तक विभिन्न चरणों से गुजरने के साथ–साथ स्वरूप गत भी बदलाव से भी रू–ब–रू हुआ है। इसे अब तक किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बाँधा जा सका है। विचारकों ने आधुनिकता के सम्बन्ध में जो अवधारणाएँ बनायी हैं, वे कभी तो इसे समझने में सहायता देती हैं तो कभी इसे अधिक उलझा कर रहस्यमय और अमूर्त बना देती हैं।[1] भिन्न–भिन्न विद्वानों ने आधुनिकता की परिभाषा अपने–अपने चिन्तन के अनुसार दी है। आधुनिकता डॉ० धनंजय वर्मा के लिए मानव–विकास की यात्रा की जटिल, संश्लिष्ट और गतिशील प्रक्रिया है। वह केवल एक स्थिति या धारणा नहीं है, निरन्तर नये होते चलने की वृत्ति और वर्तमान का बोध भी है। वह मानवीय सभ्यता और सांस्कृतिक–ऐतिहासिक उपलब्धियों से सम्पृक्त तो है ही; लेकिन उनकी सीमाओं में कैद नहीं है, न ही मोहताज है। आधुनिकता एक प्रक्रिया है, मानसिकता का बदलाव है और बदलते समय के सन्दर्भों के साथ इसका रूप बदलता रहता है।

आज का जीवन जिस तीव्रता से आगे की ओर बढ़ रहा है, उसका अनुभव समसामयिक बोध का पहलू है। इस तीव्र गतिशील जीवन में मानव प्रत्येक छोटे–से–छोटे क्षण की अनुभूति को आत्मसात् करने का प्रयास करता है। वह उन क्षणों को सुरक्षित रखता चाहता है जो जीवन की गतिशीलता से जुड़े हैं। समसामयिकता इसी क्षणानुभूति को ग्रहण करने में सहायक सिद्ध होती है।

आधुनिकता और समसामयिकता का बोध एक–दूसरे से प्रेरित होता है। मानवीय विशिष्टता के सन्दर्भ में जिन बातों पर विशेष आग्रह किया जाता है उसका केन्द्र–विन्दु मानवीय स्वाभिमान और मानव को मानव रूप में स्वीकार करने की वह दृष्टि है जो मनुष्य को आत्मविश्वास और स्वत्व प्रदान करती है। उस विश्वास और स्वत्व के आधार पर ही आधुनिकता का सारा दाय आधारित है और समसामयिकता का बोध भी अवलम्बित है। मानव–स्वाभिमान का मूल यथार्थ और मनुष्य को मनुष्य के रूप में मानने की प्रज्ञा मुख्यतः इन्हीं दो तत्त्वों द्वारा निर्धारित होता है। आधुनिकता की स्वीकृति के विना मानव–स्वाभिमान का औचित्य ही नहीं हो सकता और विना इस औचित्य के समसामयिकता का निर्वाह नहीं हो सकता।[2] समसामयिकता ही आधुनिक युगबोध है। आज जीवन जिस तीव्रता से आगे की ओर बढ़ रहा है, उसका अनुभव सामयिक बोध का ही पहलू है।[3] लक्ष्मीकान्त वर्मा के अनुसार, आधुनिकता युग विशेष का गुण है। समसामयिकता स्थिति विशेष का आयाम है। आधुनिकता एक ऐतिहासिक विशेषण है जो देशकाल के बोध के साथ–साथ सक्रियता की पुष्टि करती है। आधुनिक–काल–बोध युग–बोध का द्योतक है। विचार में आधुनिक होते हुए भी हम समसामयिक नहीं हो सकते, क्योंकि समसामयिकता का परिवेश इतना विस्तृत नहीं होता।[4]

सूर्यप्रकाश विद्यालंकार के अनुसार, आधुनिकता बड़ी तीव्रता से समसामयिकता के प्रति सचेत रहती है; किन्तु वह उसके नव–विकसित मूल्यों को स्वीकार नहीं करती है जबकि समसामयिकता उन सभी शक्तियों और मूल्यों को स्वीकार करती चलती है जो एक दूसरे से संघर्ष करते हैं।[5] समसामयिकता वर्तमान से सम्बद्ध है और आधुनिकता से सम्बद्ध होने के अलावा मूल्यबोधक भी है। समसामयिकता समय की परिधि की एक स्थिति है और आधुनिकता जीवन के विकास–क्रम की स्थिति

है।[6] अर्थात् आधुनिकता तथा समसामयिकता में अन्तर है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हम समसामयिक होकर भी आधुनिकता से अपना सम्बन्ध जोड़ सकते हैं, किन्तु आधुनिक होकर भी समसामयिक बने रहना सम्भव नहीं है। प्रत्येक युग में आधुनिकता के उपकरण अलग–अलग रूपों में दिखायी देते हैं। अतः जो पहले आधुनिक था, वह आज नहीं है और जो आज आधुनिकता के दौर से गुजर रहा है, वह शायद कल इस स्थिति में नहीं रह पायेगा। इस तरह इन दोनों में बराबर अन्तर बना रहता है।[7]

आधुनिकता एक युग–विशेष का भाव है; समसामयिकता स्थिति–विशेष का आयाम है। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का आयाम विस्तृत है और समसामयिकता की सीमा संकीर्ण और संकुचित। आधुनिकता एक ऐतिहासिक संलेषण है जो हमें देशकाल का बोध देती है, समसामयिकता देशकाल के बोध के साथ सक्रियता की भी पुष्टि करती है। जिस भी देशकाल में हम हैं, उसकी सीमाओं और विस्तार को हम समसामयिकता के यथार्थ द्वारा अनुभव करते हैं। जीवन के इन्हीं प्रसंगों में आधुनिकता के परिवेश और समसामयिकता के आयाम से हमें अपनी दृष्टि और अपने दायित्व का बोध होता है। ''अतः समसामयिकता में एक ओर जीवन के प्रति क्रियाशील होने का भाव है तो दूसरी ओर अतीत और भविष्य दोनों से अलग हटकर युग–बोध की स्थिति–विशेष अथवा क्षण–विशेष के प्रति ममत्व का भाव है। आधुनिकता में हम ऐतिहासिक बोध को हृदयंगम करते हुए अतीत और भविष्य के रूढ़ आग्रहों से अलग हटकर एक युग–विशेष से सम्पृक्त दिखायी देते हैं तथा इस सम्पृक्त चेतना को आधार बनाकर ही वास्तविकता देखते हैं।[8]

आधुनिकता वास्तव में एक प्रक्रिया है जो अपने आप में एक उपलब्धि है। इसके मूल में प्रश्नचिह्न ही निरन्तरता है जिसे लेखक हर नये–पुराने मूल्य पर लगाने के लिए बाधित हो रहा है। यह निरन्तरता वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम है और ऐतिहासिकता की देन है।[9] इस तरह आधुनिकता को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में डालकर, वर्तमान को अपने भविष्य के अनुकूल बनाकर, उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और वही आधुनिकता के नाम से अभिहित किया जाता है।

आधुनिकता धर्म और दर्शन से अनुस्यूत है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टि से प्रेरित होकर व्यवहार के क्षेत्र में इनका निषेध करने लगी। परलोक की तुलना में लोक–सत्य मानना इतिहास–विवेक है। यथार्थ का प्रत्यय आधुनिकता का मूल तर्क है। देवता के स्थान पर मनुष्य की कल्पना आधुनिकता है।[10] इस तरह, आधुनिकता का सम्बन्ध विज्ञान की उत्क्रान्ति से नहीं, मानवी विवेक से है। जब–जब पवित्र चेतना की अवस्था को तार्किक चेतना के विवेक ने झिंझोड़ा है तब–तब आधुनिकता की झिलमिलाहट हुई है।[11]

आधुनिक युग और आधुनिकता का प्रारम्भ मनुष्य द्वारा अपनी स्थिति के प्रति असन्तोष और विद्रोह करने तथा समाज की गली–सड़ी मान्यताओं और व्यवस्थाओं को चुनौती देने या उन्हें असामान्य ठहराने के संकल्प के साथ जुड़ा हुआ है। आधुनिक युग में शक्ति और सत्ताओं, व्यवस्था–तन्त्रों के विरुद्ध एक नयी जागरूकता और विद्रोही मानसिकता पनपी है, जो आधुनिकीकरण प्रक्रिया का हिस्सा है। आधुनिकता के दबाव से कुछ खास आचरणगत मनोदशाएँ, शारीरिक और मानसिक रुग्णताएँ आदि पैदा हुई हैं। उनसे निपटने के लिए कई तौर–तरीके अपनाये गये हैं। अस्वीकृति, आक्रोश, विद्रोह और संघर्ष इन्हीं से उभरकर सामने आये हैं। ये आधुनिकता–बोध के हिस्से हैं।

आधुनिकता का सम्बन्ध मानव–व्यक्तित्व की खोज से ही नहीं, मानव मुक्ति की गतिशील धारण से भी है। इसमें स्वच्छन्द रूप से आत्मनिर्णय की स्वतन्त्रता की विद्यमानता है। एक ओर यह अस्तित्ववादी दर्शन से, अस्तित्वगत स्थितियों के यथार्थ से जुड़ती है तो दूसरी ओर सामाजिक दर्शन और सामाजिक यथार्थ से।[12]

वैज्ञानिक विचारधारा आधुनिकता की धारणा है। विज्ञान से प्रभावित होकर जीवन में अनास्था का धरातल तैयार होता है। विज्ञान आधुनिक समाज का सर्वाधिक गत्यात्मक पहलू है। विज्ञान के कारण मजदूरी और मेहनत, कार्य और चिन्तन, नगर और महानगर, कस्बा और ग्राम, उत्पादन और उपयोग–सभी के मानदण्ड क्रान्तिपूर्ण ढंग से बदल गये हैं। इसके साथ ही वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों का आधुनिकीकरण हुआ है।[13]

आधुनिकता की भौतिक एवं बौद्धिक विकास–प्रक्रिया का सम्बन्ध नगरीकरण के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है। वस्तुतः नगरीकरण को आधुनिकता का कारण भी कहा जा सकता है और परिणति भी। किसी देश अथवा देश के किसी भी वर्ग की आधुनिकता की चेतना का मानदण्ड उसके नगरबोध के द्वारा सहज की आँका जा सकता है।[14] आधुनिकता एक बौद्धिक प्रक्रिया होने के साथ–साथ एक अन्वेषण भी है अर्थात् आधुनिक शब्द एक शोधपूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया है। आधुनिकता विभिन्न प्रभावों से उत्पन्न एक चेतना है जिसकी निरन्तरता को आधुनिक बोध के अन्तर्गत रखा जा सकता है।[15]

आधुनिकता का एक अहम् पहलू यह है कि मनुष्य की चेतना का एक ऐसा विन्दु होता है जो यह प्रकट करता है कि मनुष्य की चेतना है और वही समस्या को समस्या बनाती है। यहीं आधुनिकता एक अतिरिक्त सजगता है। ''आधुनिकता प्रक्रिया के रूप में अपना सम्बन्ध समकालीन और तत्कालीनता से भी बनाये रखती है, परन्तु ये सभी अपने अलग–अलग रूपों में आधुनिकता नहीं है, बल्कि ये आधुनिकता से जुड़ने वाले सूत्र हैं।[16]

आधुनिकताा का सम्बन्ध एक विशेष प्रकार की जीवन–दृष्टि से है जो युगबोध की प्रक्रिया में अपना नवीनीकरण करती चलती है अर्थात् आधुनिकता एक स्वभाव, संस्कार–प्रक्रिया है। ''आधुनिकता की प्रक्रिया का एक और पक्ष जो मुखर हुआ है इसे सर्वांग–संचेतना कहा गया है। इसमें भावों का बौद्धिकीकरण और बौ(िकता का मानवीकरण होता है।''[17] यही तत्त्व आधुनिकता की प्रक्रिया में मूल्यगत नवीनता प्रतिष्ठित करता है और उसे एक सचेत सत्ता के रूप में स्थापित करता है। ''आधुनिकता को संकटबोध का घोषणा–पत्र भी माना गया है।''[18] आधुनिकता की प्रक्रिया में संवेदना का द्विधा–विभाजन भी है। यही कारण है कि आज की विभाजित आत्मचेतना व जीवन–संवेदना जटिल अनुभवों का यथार्थ भी प्रस्तुत नहीं कर पाती। इस प्रकार, आधुनिकता एक अविभाजित संश्लिष्ट प्रक्रिया बन रही है। ''आधुनिकता की प्रक्रिया में ऐतिहासिक नैरंतर्य भी है।''[19]

इस प्रकार, आधुनिकता की प्रक्रिया को अनेक प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। ऐतिहासिक नैरन्तर्य को समझाते हुए कहा गया है कि मनुष्य इतिहास से निश्चित दिशा प्राप्त करता है जिससे वर्तमान को सफल बनाता है और भविष्य को सुदृढ़ आधार देता है अर्थात् अतीत और वर्तमान का सही विश्लेषण कर भविष्य को सुदृढ़ आधार देता है। यह कार्य मनुष्य वर्षों से करता आया है, करता रहेगा और कर रहा है; क्योंकि प्रत्येक युग अपने युग में आधुनिक होता है। इस प्रकार, आधुनिकता एक प्रक्रिया है।

सन्दर्भ सूची–

1. डॉ० धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ० 12
2. लक्ष्मीकान्त वर्मा, नयी कविता के प्रतिमान, पृ० 248
3. डॉ० हरिचरण शर्मा, नयी कविताः नये धरातल, पृ० 26
4. लक्ष्मीकान्त वर्मा, नयी कविताः नये धरातल, पृ० 26
5. सूर्यप्रकाश विद्यालंकार, सप्तकत्रयः आधुनिकता और परम्परा, पृ० 34
6. वही, पृ० 34
7. लक्ष्मीकांत वर्मा, नयी कविता के प्रतिमान, पृ० 264

8. सूर्यप्रकाश विद्यालंकार, सप्तकत्रयः आधुनिकता और परम्परा, पृ० 35
9. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, कविता और कविता, पृ० 4
10. डॉ० उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ० 6
11. डॉ० रमेश कुन्तल मेघ, आधुनिकता–बोध और आधुनिकीकरण, पृ० 56
12. डॉ० नरेन्द्र मोहन,आधुनिकताःकहानी के सन्दर्भ में,परिशोध–अंक 34–35,पृ० 46
13. डॉ० उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ० 10
14. डॉ० मैथिलीप्रसाद भारद्वाज, परिशोध, अंक 34–35, पृ० 29
15. डॉ० उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ० 1
16. सम्पा. डॉ० प्रकाश आतुर, साहित्य की प्रतिबद्धता और सरोकार (परिचर्चा–साहित्य और आधुनिकता), पृ० 190
17. डॉ० ममता अग्रवाल, एक और अन्त, धर्मयुग, 24 फरवरी, 1965, पृ० 10
18. डॉ० धर्मवीर भारती, आधुनिकता अर्थात् संकट का बोध, शिक्षायतन कॉलेज में पढ़ा गया एक परिपत्र, नवम्बर, 1959
19. डॉ० देवीशंकर अवस्थी, सन् साठ के बाद की कहानी, लेख, समकालीन कहानी, दिशा और दृष्टि (सं. धनंजय वर्मा), पृ० 85

●